

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

इंदौर विभाग - विजयादशमी उत्सव

बौद्धिक बिंदु

❖ संबोधन..... परम पवित्र भगवा ध्वज, अतिथि महोदय एवं आत्मीय स्वयंसेवक बंधुओं

❖ विजयदशमी का महत्व :-

१. नौ दिनों तक हम शक्ति की आराधना करते हैं और विजयादशमी के दिन ही शक्ति की आराधना का पर्व पूर्ण होता है।
२. जब महिषासुर नमक दैत्य के अत्याचारों से लोग त्रस्त होने लगे तब माता दुर्गा ने इसी विजयदशमी के दिन महिषासुर का वध किया था।
३. लंका के राजा रावण को मारकर भगवान श्री राम ने भी इसी दिन अधर्म पर धर्म की विजय स्थापित की थी।
४. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना भी परम पूजनीय डॉक्टर साहब के द्वारा इसी दिन की गई थी।

❖ संघ स्थापना की पृष्ठभूमि एवं स्थापना :-

१. पराधीनता के काल में हमारे समाज में आत्मविश्वमृति का भाव व्याप्त था, साथ ही हिंदू भाव का भी अभाव था।
२. डॉक्टर साहब ने लंबे अनुभव उपरांत यह अनुभूति की, कि भारत को भौतिक दास्तां से तो मुक्त करने के लिए बहुत से लोग संघर्ष कर रहे हैं लेकिन देश की मानसिक दास्तां मिटाने के लिए भी कोशिश करने की आवश्यकता है।
३. इसी विचार को लेकर के वर्ष 1925 में विजयादशमी के दिन आयोजित एक बैठक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की गई।

संचलन :-

- ❖ संचालन हमारी एकता, अनुशासन और संगठित शक्ति का समाज के सामने प्रकटीकरण है।
- ❖ अनेक होने पर भी ऐक्य रूप में चलना संचलन है।

- ❖ हम सभी पढ़ने वाले स्वयंसेवक हैं कोई स्कूल कोई कॉलेज में अध्ययन करता होगा। वैसे तो सीखने की कोई आयु सीमा नहीं होती है परंतु हम जिस आयु में हैं उसमें हमारे पास सबसे बड़ा काम सिखना ही है।
- ❖ सीखना उसे नहीं कहते कि पहले हमें फ़लाँ - फ़लाँ कार्य नहीं आता था और सीखने की एक प्रक्रिया के बाद हमें वह कार्य आ गया बल्कि सीखना तो वास्तव में उसे कहते हैं जिसके बाद हम उसे कार्य में उत्कृष्ट अर्थात् एक्सीलेंस हो जाए।

१. रमेश रमेश बाबू प्रज्ञानंदन या आर प्रज्ञानंदन यह नाम हमसे बहुतों ने सुना होगा। यह केरल में रहने वाले शतरंज खिलाड़ी हैं इनकी उम्र भी लगभग हमसे मिलती-जुलती है मतलब 17 - 18 साल । इन्होंने भी बहुत छोटी आयु में शतरंज सीखना प्रारंभ किया इन्होंने शतरंज केवल सीखा नहीं बल्कि उसमें उत्कृष्ट बने। इसी का परिणाम है कि कुछ दिनों पहले आयोजित शतरंज के विश्व कप के फाइनल मैच तक पहुंचने वाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ियों में से वे एक बने।
२. ऐसे हमारे मध्य प्रदेश के ही खिलाड़ी ऐश्वर्य प्रताप सिंह हैं। इनकी उम्र भी 20-21 वर्ष के लगभग ही है अभी कुछ दिनों पूर्व चीन में आयोजित एशियाई खेलों में इन्होंने दूसरी बार स्वर्ण पदक अर्थात् प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

इन उदाहरण को सुनकर अब हमें भी यह संकल्प लेना है कि अब हम सिर्फ सीखेंगे नहीं बल्कि उत्कृष्ट भी बनेंगे।

- ❖ सीखने के साथ एक बात और जरूरी है वह है अपने कार्यों में राष्ट्रभक्ति जागृत करना और उसे बनाए रखना। देश भक्ति का अर्थ सिर्फ यह नहीं है कि जब भारत का किसी अन्य देश से युद्ध हो या भारत का किसी और देश की टीम से क्रिकेट मैच हो तब हम भारत - भारत के नारे लगाए और जीत की प्रार्थना करें बल्कि देश भक्ति का यह भाव हमारे श्वासों के समान स्थाई रूप से हमसे जुड़ा होना चाहिए। हर काम करने के समय हमें इसका ध्यान रखना चाहिए।

उदाहरण -:

१. हम सड़क पर चिप्स के एक पैकेट से चिप्स खाते हुए चल रहे हैं जैसे ही पैकेट में से चिप्स खत्म हुई हम उस खाली पैकेट को वहीं सड़क पर ना डालकर कूड़ेदान में ही डालें यह भी देशभक्ति का एक स्वरूप है।
२. वाहन चलाने के दौरान यातायात नियमों का पालन करना भी देशभक्ति है।
३. स्वामी रामतीर्थ और फल की टोकरी वाली कहानी।

- ❖ एक अंतिम बात और जो हमें ध्यान रखती है वह है अनुशासन।
- ❖ अनुशासन ही विद्यार्थी जीवन की सफलता का मूल मंत्र है। अनुशासन के कई प्रकार हो सकते हैं जैसे समय अनुशासन, चरित्र अनुशासन, व्यवहार अनुशासन आदि।
- ❖ एक उदाहरण से इसे समझते हैं हमारे स्कूल और कोचिंग जाने और आने का समय तय है परंतु बाकी के समय की यदि कोई योजना नहीं है तो समय की पूर्व योजना के अभाव में हमारा अधिकांश समय व्यर्थ ही चला जाएगा। समय के व्यर्थ होने का अनुमान लगाने का एक उपाय है आजकल के आधुनिक मोबाइलों में एक ऑप्शन आता है 'स्क्रीन टाइम रीडिंग' इसको हम ऑन करके देखेंगे तो पता चलेगा कि मोबाइल के साथ ही दिन के 24 घंटे में से 5-6 घंटे हम मोबाइल पर बिता देते हैं। यदि हमारे दिनचर्या पहले से तय रहेगी तो किस काम को हमें कितना समय देना है यह हमें पता रहेगा।
- ❖ विजयदशमी का यह पर्व हमारी संस्कृति में पवित्रम के साथ ही विजय पर्व के रूप में भी जाना जाता है।
- ❖ पहले के युगों की अपेक्षा आज परिस्थितियों बदली हुई है। अब कोई राक्षसी या आसुरी शक्ति रावण के समान 10 सिर लगाकर या महिषासुर के समान अलग रूप बनाकर नहीं आती बल्कि ऐसी आसुरी शक्ति हमारे आसपास और कुछ पैमाने में हमारे भीतर भी अवगुणों के रूप में आ जाती है।

❖ आज के इस बौद्धिक में जिन तीन बातों का जिक्र हमने सुना अर्थात्

१. उत्कृष्ट तरीके से सीखना
२. अपने स्वभाव में राष्ट्रभक्ति लाना
३. विद्यार्थी जीवन में अनुशासन बनाए रखना

यह तीनों बातें इन आसुरी शक्तियों से लड़ने के लिए हम हमारे हथियार के रूप में हम उपयोग कर सकते हैं।

एक भारतीय फिल्म का आख्यान इस बात को ठीक रूप से व्यक्त करता है

"गीता में श्री कृष्ण ने कहीं बात गंभीर

औरों से कर लड़े, लड़े स्वयं से वीर।।

अंत में पूरा हिंदू समाज एक है, हमारा लक्ष्य एक है, हम सभी भारत माता की संतान हैं। इस भाव को मन में लेकर हम आज के संचलन में चले....धन्यवाद

बाधाएं आती हैं आएँ
घिरें प्रलय की घोर घटाएं,
पांवों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएं,
निज हाथों से हंसते-हंसते,
आग लगाकर जलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

आप सभी को विजयादशमी पर्व की अनंत शुभकामनाएँ